सत्यमेव जयते

अमृत

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी),तमिलनाडु

हिंदी पखवाड़ा 2025 का समापन समारोह

अमृत परिवार

प्रधान संरक्षक

सुश्री अनिम चेरियन
प्रधान महालेखाकार

उप संरक्षक

सुश्री विजया पी.
उप महालेखाकार

सुश्री सुबरंजनी एस.आर.
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्री सौरव रमेश
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

सुश्री सुकन्या दास
वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री स्वाति कुमार
सहायक निदेशक

सुश्री सबिता साव
कनिष्ठ अनुवादक

सहायक समिति

श्री अजयनाथ त्रिपाठी
सहायक लेखा अधिकारी

सुश्री मीना पूनम ज्योति एक्का
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री हेमंत कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

प्रकाशन

अमृत

(विभागीय छमाही हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,

361, अन्ना सालै, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018

टेलीफ़ोन नं.: 044-24324530 फ़ैक्स नं.: 044-24320562

ई–मेल: agaetamilnadu@cag.gov.in

अंक – 35 वां

वर्ष - 2025-26 (द्वितीय अंक)

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुख्य पृष्ठ परिचय

संरक्षण ही संवेदना है

अंतिम पृष्ठ परिचय

कार्यालय की सहायक महिलाओं द्वारा बनाई गई रंगोली।

अमृत

अस्वीकरण-

रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे अमृत परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्र.सं.	विषयवस्तु		पृ.सं.
i	राजभाषा हिंदी दिवस 2025 के शुभ अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश		6
ii	संदेश	प्रधान महालेखाकार	8
iii	संदेश	वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन	9
iv	संदेश	उप महालेखाकार/ पेंशन	10
v	संदेश	उप महालेखाकार/लेखा	11
vi	संपादकों की कलम से	संपादक मंडल	12
	रचनाएँ	रचनाकार	
1	पेंशन अदालत	हकदारी अनुभाग (पेंशन)	13
2	असम औऱ मेघालय की हमारी यात्रा	श्रीमती लता सुंदर	15
3	गर्भ की फुसफुसाहट	सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर	18
4	हिंदी भाषा का महत्व	श्री अजयनाथ त्रिपाठी	20
5	संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार	सुश्री अंजिता अमन	22
6	द्वंद	श्री विवेक कुमार	24
7	तृष्णा की सूझबूझ	सुश्री ज्योति वर्मा	25
8	क्योंकि...एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति असतित्व में होता है	सुश्री तनु शर्मा	27
9	घर का आँगन	श्री शाह सावन जयेश कुमार	31
10	भूख और स्वाभिमान	श्री आयुष कुमार	33
11	स्वाद बनाम स्टाइल	श्री शिव जी पांडे	35
12	फिल्म और समाज पर उनका प्रभाव	श्री आशीष रंजन	37
13	अर्थव्यवस्था – एक अधूरा विषय	सुश्री माधवी तोमर	39
14	अनमोल पत्र		42
15	कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ।		43

गृह मंत्री का संदेश

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

संदेश

सुश्री अनिम चेरियन
प्रधान महालेखाकार

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्यालय की "अमृत" पत्रिका छमाही प्रकाशित हुई है। किसी भी देश की असली पहचान उसकी 'भाषा' से होती है। भाषा ही एक ऐसा माध्यम है, जिसकी सहायता से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति एवं अस्मिता का एक अनिवार्य अंग है। इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा, प्रेम एवं उसके प्रचार-प्रसार में उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

मैं कार्यालय के उन समस्त कर्मियों की सराहना करती हूँ जिनके प्रयास से यह पत्रिका प्रकाशित होने जा रही है। मैं आशा करती हूँ कि इस अंक में समाहित सभी रचनाएँ पाठकों को पसंद आएगी। मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

संदेश

सुश्री सुबरंजनी एस.आर.
वरिष्ठ उप महालेखाकार

भाषा के माध्यम से हमारी धरोहर, शैली और सांस्कृतिक विरासत को संजीवित किया जा सकता है। भाषा के माध्यम से हम अपनी कथा-कहानियों, गानों, कविताओं और नृत्यों को अन्यों के साथ साझा कर सकते हैं, जिससे हमारी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है। भारतीय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग है भाषा। इसी कड़ी में, राजभाषा हिंदी के महत्व को समझना और इसे समर्थ बनाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। मुझे प्रसन्नता हो रही है कि इस कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका "अमृत" के 35वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी का विकास के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि करना भी है। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में राजभाषा की उतरोत्तर प्रगति में "अमृत" की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मैं पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देती हूँ और इसकी अनवरत सफलता की कामना करती हूँ।

संदेश

सुश्री विजया पी.
उप महालेखाकार

लोगों की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को आकार देने में भाषा की अहम भूमिका होती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में भाषा सिर्फ संचार का माध्यम मात्र नहीं रह जाती, बल्कि यह एकता की अभिव्यक्ति और वाहक बन जाती है। हिंदी सिर्फ एक भाषा का काम ही नहीं करती है। यह सभी लोगों को एक दूसरे को आपस में जोड़े रखने का काम भी करती है। हिन्दी भाषा भारतीय अस्मिता का एक अनिवार्य अंग है। हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "अमृत" के 35वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है जो हमारे लिए हर्ष का विषय है। पत्रिका, कार्यालय के कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने का मंच प्रदान करती है, आशा है यह अंक हमारे पाठकों के हृदय में अपना स्थान बना पाएगी। मैं रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा के लिए और संपादक मंडल के संपादन हेतु सहृदय धन्यवाद करता हूँ। मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी हमारी पत्रिका और भी उन्नति की ओर बढ़ेगी ।

संदेश

श्री सौरव रमेश
उप महालेखाकार

भाषा भावों की वाहिका और विचारों की माध्यम होती है। अतएव किसी भी राष्ट्र की भावोत्कर्ष और विचारों की समर्थता उसकी भाषा से स्पष्ट होती है। प्रत्येक भाषा और प्रत्येक साहित्य अपने देश काल और धर्म से परिचित तथा विकसित होता है। हिंदी भाषा बहुत पुरानी है और इसका संस्कृत से सीधा विकास हुआ है। इस प्रकार यह दुनिया की सबसे पुरानी धार्मिक और साहित्यिक परंपराओं में से एक का हिस्सा है – ऐसी परंपराएं जिन्होंने अन्य धर्मों और कला कृतियों को प्रभावित किया है, चाहे हम इसे महसूस करें या नहीं। हिंदी हमारी राजभाषा है जिसका प्रोत्साहन हम प्रत्येक वर्ष अपनी पत्रिका के माध्यम से करते हैं, जिसमें कार्यालय के कार्मिकों का सहयोग हिंदी के प्रति उनका प्यार तथा राजभाषा के प्रति उनकी सद्भावना को चित्रित करता है।

मैं कार्यालय के उन समस्त कर्मियों की सराहना करता हूँ जिनके प्रयास से यह पत्रिका प्रकाशित होने जा रही है। मैं आशा करता हूँ कि "अमृत" के इस अंक में समाहित सभी रचनाएँ पाठकों को पसंद आएगी। मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

संपादक मंडल की ओर से.....

"मैं भारत के संविधान की धारा 343 में बसती हूँ,
देवनागरी मेरी लिपि है, सरकारी काम में रहती हूँ।
राष्ट्रभाषा नहीं, पर राजभाषा कहलाती हूँ,
14 सितंबर को हर साल विशेष सम्मान पाती हूँ।
बताओ, मैं कौन हूँ?"

जी हाँ!! ठीक पहचाना आपने। उक्त चार पंक्तियों में 'हिंदी' भाषा की बात हो रही है, जो कई बोलियों से गुजरते हुए, अपनी पहचान बनाए हुए है। संवैधानिक आदेशों की अनुपालना करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अखिल भारतीय स्तर पर सम्मेलन, संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। कार्यालयों के स्तर पर भी राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु अनेक कार्यक्रम जैसे कार्यशाला, संगोष्ठी, बैठक, प्रतियोगिताएँ, प्रोत्साहन योजनाएँ चलाईं/आयोजित की जाती हैं। इसी कड़ी में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन हिंदी पत्रिका भी एक अहम भूमिका निभाती है। पत्रिका, कार्यालय के पदधारियों की साहित्यिक शैली को ही नहीं वरन् उनकी विचार-शक्ति को दर्शाती है । कहा जाता है कि 'तलवार से भी तेज धार कलम में होता है'। इस कार्यालय के कार्मिकों का लेखन प्रयास इस का प्रत्यक्ष उदाहरण है। अपने नाम 'अमृत' के अनुरूप यह पत्रिका आप सुबुद्ध पाठकों के समक्ष उसी सकारत्मकता और ऊर्जा के साथ एक और नए अंक के साथ प्रस्तुत किया गया है। रचनाकारों के मनोभावों को, लेखन प्रतिभा को, राजभाषा के प्रति उनकी रुचि को बनाए रखने का मंच है अमृत। राजभाषा को बढ़ाने में और सभी के मन तक पहुँचाने का एक लघुतम प्रयास है ये पत्रिका।

इस पत्रिका को और अधिक रुचिकर बनाने, रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए आप पाठकगण अपने अमूल्य सुझाव देकर हमें अवश्य अनुग्रहित करें ।

जय हिंद!

पेंशन अदालत

हकदारी (पेंशन) अनुभाग

तमिलनाडु के प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय ने वर्षों से अपनी सेवाओं के माध्यम से इस राज्य के लोगों की सेवा करने का प्रयास किया है। इसमें एक प्रमुख क्षेत्र है जिसमें कर्मचारी, पेंशनभोगियों के संबंध में सेवाओं के माध्यम से राज्य के नागरिकों के जीवन को छूते हैं। राज्य सरकार के पेंशनभोगियों की संख्या 7 लाख पेंशनभोगियों को पार कर गई है और इस विशाल समुदाय को सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होना इस कार्यालय के कर्मचारियों के लिए वास्तव में सौभाग्य की बात है।

कार्यालय में पहले से ही पेंशन पूछताछ कक्ष जैसी कुछ सुविधाएं मौजूद हैं, जहां पेंशनभोगी आवश्यकतानुसार किसी भी मामले पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए हमारे पेंशन विंग से संपर्क कर सकते हैं। तथापि,, और अधिक संपर्क गतिविधियों की आवश्यकता को पहचानते हुए और जमीनी स्तर पर पेंशनभोगी समुदाय को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने के लिए, वर्ष की चौथी तिमाही के दौरान मदुरै क्षेत्र में एक पेंशन अदालत आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार के आयोजन से पहले काफी तैयारी करनी पड़ी, जो विभिन्न विभागों के कर्मचारियों के प्रयासों से संभव हो पाई।

राज्य सरकार के कार्यालयों, जैसे कि कोषागार एवं लेखा निदेशक और क्षेत्रीय संयुक्त निदेशक के कार्यालय के साथ घनिष्ठ समन्वय के माध्यम से, अदालत को, योजना के अनुसार, 23 फरवरी 2026 को मदुरै स्थित जिला कलेक्टर कार्यालय परिसर में आयोजित किया जा सका। पेंशनभोगी संघों सहित विभिन्न स्रोतों के माध्यम से पर्याप्त प्रचार-प्रसार किया गया था।

मदुरै में आयोजित अदालत का नेतृत्व समूह अधिकारी श्रीमती विजया पिल्ली, उप महालेखाकार महोदया द्वारा चार सहायक लेखा अधिकारियों - श्रीमती एस. श्रीप्रिया, श्रीमती के. अमृतलक्ष्मी, श्री क्रिस्टोफर ए अनस और श्री वी. गोकुलकृष्णन की टीम ने किया। इस पहल ने क्षेत्र के पेंशनभोगियों और जीपीएफ ग्राहकों की शिकायतों को सुनने के लिए एक मंच प्रदान किया।

पेंशनभोगियों के अलावा, कोषागार अधिकारियों और पेंशनभोगी संघ के प्रतिनिधियों जैसे अन्य हितधारकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। उस दिन भाग लेने वाले लगभग 250 पेंशनभोगियों और ग्राहकों से लगभग 200 अभ्यावेदन प्राप्त हुए।

यह अवसर इस योजना का नेतृत्व करने वाली टीम के लिए अप्रत्याशित रूप से ज्ञानवर्धक साबित हुआ। हालांकि कार्यालय के हकदारी अनुभाग में अधिकारी प्रतिदिन कुशल सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए कार्यरत रहते हैं, लेकिन जैसा कि इसमें भाग लेने वाले अधिकारियों ने बताया कि यह उनका सौभाग्य था कि उन्हें पेंशनभोगियों और ग्राहकों के विभिन्न प्रश्नों और शंकाओं का मौके पर ही उत्तर देने का अवसर मिला । प्रश्नों में प्रक्रियाओं से लेकर पारिवारिक पेंशन और पुनरीक्षण मामले से संबंधित पहलुओं तक व्यापक मुद्दे शामिल थे। पेंशनभोगियों को आश्वासन दिया गया कि जिन मुद्दों का मौके पर समाधान नहीं किया जा सका, उन्हें आने वाले दिनों में कार्यालय में अवलोकन किया जाएगा। विकलांग व्यक्तियों आदि से संबंधित जीओ 325 आवेदनों को भी शामिल किया गया। जीपीएफ ग्राहकों के लिए मिसिंग क्रेडिट एक चिंता का विषय था, जिसमें हमारे अधिकारियों ने सहायता प्रदान की।

जब हमारे अधिकारी अंततः उस दिन के लिए तैयार हुए और वापस चेन्नई जाने वाली बस में चढ़े, तो यह जानकर उनका हृदय कृतज्ञता से भर गया कि वह दिन उनके लिए अनमोल यादें लेकर आया है।

असम और मेघालय की हमारी यात्रा

श्रीमती लता सुंदर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

पिछले साल मार्च-अप्रैल के आसपास, मेरे करीबी दोस्त (जो इस साल सेवानिवृत्त हो रहे हैं) और मैं अपनी छुट्टी यात्रा रियायत (एलटीसी) पात्रताओं की समीक्षा कर रहे थे। दावा अनुभाग से जाँच करने पर, मुझे पता चला कि मेरे पास एक एलटीसी उपलब्ध है, जिसका लाभ 31 दिसंबर से पहले उठाना ज़रूरी था। मैंने यात्रा स्थलों के बारे में सुझाव लेने के लिए दोस्तों और सहकर्मियों से पूछना शुरू किया।
शुरू में, मैंने ओडिशा के बारे में सोचा, एक ऐसी जगह जहाँ मैं पहले कभी नहीं गई थी। हालाँकि, मेरे दोस्तों ने बताया कि मुख्य आकर्षण-पुरी में जगन्नाथ मंदिर है। और गर्मियों के दौरान बहुत भीड़भाड़ होगा। तभी असम और मेघालय जाने का विचार मन में आया- दो राज्य जिन्हें मैंने अभी तक नहीं देखा था। शिलांग के एक सहकर्मी ने मुझे आश्वस्त किया कि यह सुंदर और सुरक्षित दोनों है। उन्होंने घूमने लायक जगहों की एक सूची साझा की और सुझाव दिया कि हम 15 मई से पहले यात्रा करें, क्योंकि आमतौर पर मानसून उसके बाद शुरू होता है। घर वापस आकर, मैंने अपने पति के साथ योजना पर चर्चा की, और वे मई के पहले सप्ताह में यात्रा करने के लिए सहमत हो गए।

मैंने अपनी जुड़वां बहन से भी बात की, जो हैदराबाद में एजी के कार्यालय में काम करती है। कुछ दिनों के विचार-विमर्श के बाद, उसने और उसके पति ने भी हमारे साथ आने और यात्रा के लिए अपनी LTC का लाभ उठाने का फैसला किया। हमने सप्ताहांत सहित पाँच दिनों की यात्रा की योजना बनाई, जिसमें केवल तीन दिन की छुट्टी ली गई। अपनी छुट्टियों की पुष्टि करने के बाद, हमने अपनी फ्लाइट टिकट और आवास बुक किए।

यात्रा कार्यक्रम और हमारी यात्रा

दिन 1: गुवाहाटी - कामाख्या मंदिर और ब्रह्मपुत्र नदी

हम सुबह गुवाहाटी में उतरे और हमारे मधुर और मृदुभाषी ड्राइवर बहादुर ने हमारा स्वागत किया। वह बेहतरीन अंग्रेजी बोलता था। हमारा पहला पड़ाव कामाख्या मंदिर था, जो ब्रह्मपुत्र नदी के मनोरम दृश्यों के साथ नीलांचल पहाड़ी के ऊपर स्थित है। एक स्थानीय संपर्क ने हमें प्रक्रिया को समझने में मदद की, और कतार में तीन घंटे खड़े रहने के बाद, हमने कामाख्या देवी के दर्शन किए, जिनकी पूजा एक प्राकृतिक योनि के आकार की चट्टान के रूप में की जाती है। हमने सरस्वती और लक्ष्मी के भी दर्शन किए जो मुख्य देवी के पीछे पानी के अंदर चट्टानों के रूप में हैं। आध्यात्मिक वातावरण हमारी यात्रा के लिए एक आदर्श शुरुआत थी।

फिर हमने पान बाज़ार में एक आरामदायक होटल में चेक इन किया। शाम को, हमने ब्रह्मपुत्र नदी का दौरा किया और अपने होटल में एक स्वादिष्ट डिनर किया। थोड़ी दूर चलने पर हम पास की साड़ियों की दुकानों पर पहुँचे, और हमने खुशी-खुशी कुछ बेहतरीन असम सिल्क साड़ियाँ खरीदीं।

दिन 2: उमियम झील और डॉन बॉस्को संग्रहालय

नाश्ते के बाद, हम शिलांग के लिए रवाना हुए। हमारी ड्राइव बहुत ही सुंदर थी, जिसमें देवदार से ढकी पहाड़ियाँ और घुमावदार सड़कें थीं। हम सुरम्य उमियम झील पर रुके, हालाँकि वीआईपी कार्यक्रम के कारण बोटिंग उपलब्ध नहीं थी।

शिलांग में होटल ढूँढ़ना चुनौतीपूर्ण साबित हुआ, और हमारी शुरुआती बुकिंग निराशाजनक थी - कोई लिफ्ट नहीं थी और सुविधाएँ खराब थीं। हमने जल्दी ही एक बेहतर जगह ढूँढ़ ली और फिर बंद होने से पहले डॉन बॉस्को संग्रहालय का दौरा किया। इसकी 16 दीर्घाओं और मनोरम दृश्यों की पेशकश करने वाले स्काईवॉक के साथ, संग्रहालय ने हमें पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध विरासत की गहरी जानकारी दी। शिलांग में मद्रास कैफे में डिनर एक शानदार अनुभव था, जहाँ स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय भोजन परोसा गया। कैफे एक तमिल उद्यमी द्वारा चलाया जाता है।

दिन 3: चेरापूंजी और लिविंग रूट ब्रिज

इसके बाद, हमने मावलिननॉन्ग के रास्ते में सिंगल लिविंग रूट ब्रिज को देखने के लिए नीचे उतरे - एक अविश्वसनीय प्राकृतिक चमत्कार। हालाँकि समय की कमी के कारण हमने डबल-डेकर ब्रिज को छोड़ दिया, फिर भी यह एक यादगार अनुभव था।

वहाँ से, हम चेरापूंजी की ओर बढ़े, जो अपनी वर्षा और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। आश्चर्यजनक रूप से, चेरापूंजी में बारिश नहीं हुई और यह एक सुखद धूप वाला दिन था। हमने ऑरेंज रेस्टोरेंट में दोपहर का भोजन किया, जो एक शाकाहारी जगह है, और नोहकलिकाई फॉल्स, सेवन सिस्टर्स फॉल्स और मावस्मई गुफाओं का दौरा किया - प्रत्येक अपने आप में विस्मयकारी है। अपनी पूरी यात्रा के दौरान, हम वहां की महिलाओं को जीवंत और सुरुचिपूर्ण पारंपरिक खासी पोशाक पहने देखकर बहुत प्रसन्न हुए, जिसने हमारे अनुभव में एक अनोखा आकर्षण जोड़ दिया।

दिन 4: मावलिननॉन्ग और दावकी

हम एशिया के सबसे स्वच्छ गांव मावलिननॉन्ग की ओर बढ़े। फूलों से सजे रास्ते और बांस के कूड़ेदान ग्रामीणों के गर्व और अनुशासन को दर्शाते हैं। एक नज़ारे से, हमने बांग्लादेश की झलक देखी। वहाँ से, हम दावकी गए। दावकी में, हम भारत-बांग्लादेश सीमा की दीवार को देखकर रोमांचित हो गए और तस्वीरें लीं। सबसे खास बात क्रिस्टल-क्लियर उमंगोट नदी पर नाव की सवारी थी - इतनी साफ़ कि ऐसा लग रहा था जैसे नावें हवा में तैर रही हों। हम रात को शिलांग लौट आए, दिन का अंत पुलिस बाज़ार में खरीदारी और मद्रास कैफ़े में डिनर के साथ किया।

दिन 5: लैटलम कैन्यन और वापसी

अपने अंतिम दिन, हमने वार्ड्स झील के चारों ओर एक शांतिपूर्ण सुबह की सैर की, फिर अपनी गहरी घाटियों और मनोरम दृश्यों के लिए प्रसिद्ध आश्चर्यजनक लैटलम कैन्यन का दौरा किया। हमारे जानकार ड्राइवर ने पूरे समय हमारा कुशलतापूर्वक मार्गदर्शन किया।मेरे और मेरी बहन के लिए यह गर्व की बात थी कि शहर के बीचों-बीच हमारे महालेखाकार का कार्यालय है, जहाँ से हम रोज़ गुज़रते थे। हमने शिलांग में अपने दफ़्तर के बगल में सी जी एच एस (CGHS) भी देखा और सोचा कि वहाँ काम करने वाले कर्मचारियों के लिए यह कितना सुविधाजनक होगा।

गुवाहाटी एयरपोर्ट के रास्ते में हमने पैक्ड लंच लिया। बिना किसी परेशानी के उड़ान भरने के बाद, हम रात में चेन्नई पहुँच गए - थके हुए लेकिन बेहद संतुष्ट, दिलों में यादें भरी हुई।

गर्भ की फुसफुसाहट: एक भ्रूण की आवाज़

सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर
सहायक लेखा अधिकारी

हम अक्सर मां के गर्भ में पल रही उस शांत दुनिया को नज़रअंदाज़ कर देते हैं — जहाँ जीवन की शुरुआत होती है, सपनों का आकार बनता है और सृष्टि का चमत्कार धीरे-धीरे साकार होता है।
अगर हम एक भ्रूण की आवाज़ सुन पाते, तो वह क्या कहता? जीवन, प्रेम, भय और आशा के बारे में उसकी क्या भावनाएँ होतीं?

यह रहा एक अजन्मे बच्चे की दिल छू लेने वाली और आँखें खोल देने वाली बातचीत।
अजन्मा बच्चा बोलता है

“हैलो...क्या तुम मुझे सुन सकते हो?

मुझे बोलना नहीं आता, लेकिन मेरे विचार इस गर्म, सुरक्षित दुनिया में बहुत ज़ोर से गूंजते हैं।
मैं अभी कुछ ही महीनों का हूँ, फिर भी मैं सब कुछ महसूस करता हूँ — माँ की धड़कनों की लय, उनकी हँसी, उनके आँसू।

मुझे अभी नाम नहीं मिला है...पर मेरी आत्मा है। मैं छोटा हूँ, लेकिन मैं ज़िंदा हूँ”।

माँ से बातचीत

भ्रूण: माँ... कल तुम्हारी धड़कनें धीमी थीं। क्या तुम थकी हुई थीं? क्या तुम उदास थीं? मैंने तुम्हें दिलासा देने के लिए हल्की सी लात मारी...क्या तुमने महसूस किया?

माँ (सोचते हुए): "पता नहीं तू अंदर ठीक है या नहीं...पर मैं हर दिन दुआ करती हूँ कि तू सुरक्षित और खुश रहे।"

भ्रूण: तुम ही मेरी दुनिया हो, माँ। मुझे आसमान का पता नहीं, लेकिन तुम्हारा गर्भ ही मेरा ब्रह्मांड है।
बाहर की आवाज़ें हल्की-हल्की आती हैं — कभी संगीत, कभी बहस, कभी सन्नाटा।

पर मैं तुमसे कहना चाहता हूँ...
मैं जीवन के सपने देख रहा हूँ।
मैं रोशनी का सपना देखता हूँ।
तुम्हारे स्पर्श का सपना देखता हूँ।

दुनिया को एक संदेश
तुमसे, जो यह पढ़ रहे हो...
तुम भी कभी मेरी तरह थे — गर्भ में, धीरे-धीरे बनते हुए, अंधेरे में तैरते हुए।
तुमसे भी पहले प्रेम किया गया था, जैसे मुझसे किया जा रहा है।
तो हम यह प्यार भूल क्यों जाते हैं?
हम एक-दूसरे को चोट क्यों पहुँचाते हैं?
नफ़रत, युद्ध और लालच क्यों?
मैंने तुम्हारी दुनिया अभी देखी नहीं...पर उसकी तरंगें महसूस करता हूँ।
शांति की झलक मुझे सुकून देती है...और हिंसा की गूंज मुझे डरा देती है।
कृपया इस दुनिया को बेहतर बनाओ — ताकि मैं भी एक खूबसूरत दुनिया बना सकूँ।

जीवन का चमत्कार
हर जीवन मौन में शुरू होता है।
हर दिल अंधेरे में धड़कना सीखता है।
हर बच्चा, जन्म से पहले, दुनिया पर अंधा विश्वास करता है।
उस भरोसे को मत तोड़ो।

भ्रूण की आख़िरी फुसफुसाहट
मैं सिर्फ़ कोशिकाओं का समूह नहीं हूँ।
मैं भविष्य हूँ।
मैं शुद्ध प्रेम का दूसरा मौका हूँ।
मैं मांस में लिपटी आशा हूँ।
एक ऐसी दुनिया बनाओ जिसमें मेरा स्वागत डर से नहीं, प्रेम से हो।
जब तक मैं अपनी आँखें खोलूं...
दयालु बनो। इंसान बनो। बेहतर बनो।

यह सिर्फ़ एक अजन्मे बच्चे की कहानी नहीं है — यह हर अजन्मी आत्मा की पुकार है, जो एक सुंदर दुनिया की उम्मीद लेकर आई है। आइए हम एक ऐसा संसार बनाएं जहाँ हर जीवन को उम्मीद और सम्मान से स्वागत मिले। क्योंकि हर धड़कन की अहमियत होती है — यहाँ तक कि वो भी जो अभी सुनी नहीं गई है।

हिन्दी भाषा का महत्व

श्री अजयनाथ त्रिपाठी
सहायक लेखा अधिकारी

"जन जन की भाषा है हिन्दी, भारत की आशा है हिन्दी
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा, वो मजबूत धागा है हिन्दी"

भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत रही है और इसी भाषा का विभिन्न काल खण्डों में हुए परिवर्तनों से हिन्दी भाषा का विकास हुआ है, संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से प्राचीन हिन्दी, प्राचीन हिन्दी से आधुनिक हिन्दी का विकास हुआ है, जिसे आज हम सब बोलते हैं।

हिन्दी सिर्फ एक भाषा ही नहीं है अपितु यह हम सबके जीवन मूल्यों; संस्कृति और विचारों की सच्ची परिचायक भी है। यह बहुत सरल सहज और सुगम भाषा होने के साथ ही हिन्दी विश्व की सबल वैज्ञानिक भाषा भी है। इसे दुनिया भर में समझने, बोलेने और चाहने वाले लोग बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा मंदारिन है तो दूसरा स्थान हिन्दी भाषा का ही आता है, हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश के एकता की सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिन्दी विभिन्न भाषाओं के शब्दों को अपने साथ जोड़कर हमारे देश की सम्पर्क भा की भूमिका निभा रही है।

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने हिन्दी भाषा के महत्व को बहुत ही सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया है उन्होंने कहा था कि

"भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिन्दी महानदी"

हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए हमारे देश के संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया है, आजादी की लड़ाई के दौरान हिन्दी भाषा ही थी जिसका इस्तेमाल करके स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिकों ने हमारे देश को आजादी दिलाई थी। उत्तर से दक्षिण भारत तक आजादी के नायकों ने खुले दिल से हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया था।

वैश्वीकरण के दौर में आज जहाँ अंग्रेजी का बोलबाला है इसके बावजूद विश्व स्तर पर हिन्दी एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। दुनिया के लगभग 40 देशों के लगभग 600 विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना जैसे लगभग 12 देशों में हिन्दी एक क्षेत्रीय भाषा भी है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने वर्ष 1917 में गुजरात के भरुच में हिंदी भाषा के महत्व को बताते हुए इसे राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत निम्न शब्दों में की थी उन्होंने कहा था -

"भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा इस्तेमाल की जाती है यह समस्त भारत के आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग किए जाने के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।"

यह माना जाता है कि हिन्दी भाषा जैसी लिखी जाती है वैसी ही बोली जाती है। हिन्दी भाषा का उपयोग हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों के बीच संचार के लिए सबसे ज्यादा किया जाता है। हिन्दी यूनेस्को द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में से एक है इसका प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति और संचार में भी किया जाता है।

'हिन्दी' साहित्य, संगीत और सिनेमा का खजाना है जिसमें कई प्रसिद्ध लेखक, कवि, गायक और अभिनेता हुए है, जिन्होंने भारतीय पहचान और चेतना को आकार दिया है। हिन्दी एक भाषा से कहीं बढ़कर हमारे देश की समृद्ध और विविध संस्कृति की अभिव्यक्ति है। यह एक ऐसा पुल है जो अतीत को वर्तमान से, स्थानीय को वैश्विक से और प्राचीन को आधुनिक से जोड़ती है।

हिन्दी एक भाषा हीं नहीं है यह हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत भी है जो हमें हमारी जड़ों और पारम्पराओं से जोड़ती है आज जहाँ भौतिकता और पाश्चात्य संस्हति का तड़का हमारे जीवन शैली में बढ़ता जा रहा है वहाँ हिन्दी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार की ज्यादा जरुरत महसूस हो रही है, हमें मिल-जुलकर हिन्दी भाषा का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग कर इसे विश्व की भाषा बनाने की दिशा में बढ़ाना होगा।

मन की भाषा, प्रेम की भाषा
हिन्दी है जन-जन की भाषा।

संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार

सुश्री अंजिता अमन
आशुलिपिक

परिवार एक कटोरे में रखे सलाद की तरह होता है, जिसमें तरह तरह की सब्जियों और फलों का मिश्रण होता है। कुछ खट्टे, कुछ मीठे, कुछ लाल, हरे। ठीक इसी तरह से परिवार में भी अलग-अलग लोग होते हैं। पापा, मम्मी, बच्चे, दादा-दादी आदि।

परिवार को दो तरह से वर्गीकृत किया जाता है -

1. संयुक्त परिवार - संयुक्त परिवार में कई सारे रिश्ते शामिल होते हैं। जैसे- दादा-दादी, माँ-बाप, भाई-बहन, चाचा-चाची, ताऊ-ताई इत्यादि। ये केवल एक पीढ़ी तक सीमित नहीं होते। इनमें कई सारी पीढ़ियाँ शामिल होती हैं। संयुक्त परिवार एक छाते की तरह होता है। और इसकी आवश्यकता महज तब तक इंसान को नहीं समझ आती जब तक उस पर दुखों का बादल न मंडराए। संयुक्त परिवार के बहुत सी सकारात्मक भूमिकाएं हैं।

(क) किताब से परे ज्ञान - यदि आप संयुक्त परवार को देखेंगे तो उसमें रह रहे बुजुर्ग आपके बच्चों को किताबी ज्ञान से परे अनुभवों के ज्ञान के मोती प्रदान करते हैं। कहानियाँ, कविताएँ, पौराणिक कथाएँ आदि सुनाकर वे बच्चों को अनेक तरह से प्रवाभित करते हैं।

(ख) सुख-दुख के साथी - संयुक्त परिवार में रह रहे लोग एक दूसरे के सुख-दुख के साथी होते हैं। अगर माँ-बाप दोनों को दफ्तर जाना है तो बच्चों को घर के अन्य सदस्य संभाल लेते हैं।

(ग) त्योहारों व उत्सवों में उत्साह - यदि त्योहारों व उत्सवों के अवसर पर परिवार साथ न रहे तो सब अधूरा - सा लगता है। परिवार में रह रहे लोगों से घर में और भी ज्यादा हर्षोल्लास का माहौल बना रहता है। लोग खुशी-खुशी एक दूसरे का हाथ बँटाते हैं।

(घ) एकजुटता की भावना - संयुक्त परिवार से एकजुटता की भावना आती है। संयुक्त परिवार में रहने के अपने कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। संयुक्त परिवार में अपनी जरुरतों को दर-किनार कर हमें पहले दूसरों की जरुरतों पर ध्यान देना पड़ता है। बात-बात पर घर के लोगों में मनमुटाव होना भी स्वाभाविक हो जाता है। जिससे परिवार के लोगों के बीच दूरियां आ जाती है।

2. एकल परिवार - एकल परिवार का अर्थ है, वह परिवार जो केवल एक ही पीढ़ी तक सीमित हो। जिसमें केवल माँ-बाप एवं बच्चे रहते हों। आजकल एकल परिवार की संख्या बढ़ती जा रही है। इसके कई कारण हैं, जो इस प्रकार है।

- शहर के दूर-दराज इलाकों में रहकर नौकरी की तलाश करना।
- बच्चों को घर से बाहर पढ़ाई के लिए शहरों में लाना।
- घर के आपसी मन-मुटाव।

(क)स्वतंत्रता – एकल परिवार में रहने से लोग स्वतंत्र होते हैं। उन्हें हर किसी बात पर अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती, न हीं उन्हें हर बात पर रोका-टोका जाता है। लोग अपनी मर्जी के मालिक होते हैं।

(ख)आपसी मन-मुटाव से छुटकारा – एकल परिवार में रहने से आपसी मन-मुटाव की संभवानाएं कम हो जाती हैं।
एक कहावत है – "दूर के ढोल सुहावने होते हैं।" यदि परिवार के लोग किसी-किसी अवसर पर मिलेगें तो लड़ाई-झगड़े नहीं होंगे। जिससे मनमुटाव से छुटकारा मिल जाता है। और लोगों में आपस में कलेश नहीं होता है।

एकल परिवार में रहने के नुकसान / हानियाँ -
(क) अकेलापन- एकल परिवार में अकेलापन होता है। आप हर किसी से अपने मन की बात नहीं बता सकते, हँस बोल नहीं सकते। कहा भी जाता है 'अकेलापन काटने को दौड़ता है'।

(ख) कमजोरी – एकल परिवार में रहने से एकजुटता की भावना में कमी होती है। लोग कमजोर व लाचार होते हैं। लाख पैसे हो पर उनके सुख-दुख में उनके साथ खड़ा होने के लिए कोई नहीं होता।

प्रकृति का एक नियम है। कोई भी चीज पूर्णतः न तो सकारात्मक हो सकती है और न ही नकारात्मक। हर एक चीज को देखने का अपना-अपना नजरिया होता है। संयुक्त परिवार की अपनी खामियाँ व खूबियाँ हैं। एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति ही तय करती है कि वह क्या सोच रखता है।

परिवार आखिरकार परिवार ही होता है चाहे वह संयुक्त हो अथवा एकल।
कहा भी गया है—'संगत से गुण आवत है संगत से गुण जात'।
अर्थात जो हम करेंगे वही हमसे हमारी आने वाली पीढ़ी सीखेगी। अतः हम जिस तरह के भी परिवार में रहें बस सद्भावना, मेल-मिलाप व सफलता के साथ रहें।

द्वंद्व

श्री विवेक कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

टूटी बिखरी आशा है,
हर ओर इधर निराशा है,
किस ओर हाथ बढ़ाऊ मैं ?
हर शख़्स यहाँ नया सा है।

खुशियों में यहाँ मेले है,
गम में मगर, अकेले हैं,
सफलता में, सबकी वाह-वाह है,
पर सच में, किसको परवाह है?

जीवन मझधार में नाव है,
सुख दुख इसके पड़ाव है।
कभी नीम तो कभी शहद है
पर यकीन मानो जिंदगी
ख़ूबसूरत बेहद है।

तृष्णा की सूझबूझ

सुश्री ज्योति वर्मा
आशुलिपिक

किसी गाँव में एक छोटा परिवार रहता था। उस परिवार में एक बूढ़ी माँ, एक छोटा भाई और एक बड़ी बहन रहते थे। बहन का नाम था तृष्णा। वही घर की ज़िम्मेदारियाँ निभाती थी। जब तृष्णा छोटी थी तभी उसके पिता जी गुज़र गए थे। तभी से उसकी माता जी की भी सेहत गिरती चली गई। सारा बोझ तृष्णा पर आ पड़ा। वह रोज़ सुबह ही घर से काम के लिए निकाल पड़ती। साथ ही, अपने छोटे भाई को भी ले जाती थी। वह अपने भाई को अपने पीठ पर बाँधे रखती और सारा काम खत्म करती। शाम को काम खत्म करके घर वापस लौटती। एक सुबह वह घर से निकल ही रही थी कि उसने देखा एक काला सा, लंबा, मोटा आदमी उसकी तरफ चलता आ रहा है। आते ही उसने घर के बाहर खड़ी साइकल पटक दी। जब तृष्णा ने यह सब देखा तो डर गई और उस व्यक्ति से चिल्लाकर आतंक मचाने का कारण पूछा। तो उस व्यक्ति ने जवाब दिया-“तेरे पिता ने मरने से पहले मुझसे बहुत सारा उधार लिया है”। उसने यह भी धमकी दी कि जल्द से जल्द वह रकम लौटा दे या अपनी ज़मीन उसके नाम कर दे। तृष्णा डर गई। वह भागकर अंदर गई और अपनी माँ से सच्चाई पूछी। उसकी माँ ने जवाब दिया “”बेटा पिता ने पैसे लिए ज़रूर थे, पर सूद-समेत लौटा दिये थे। वह धूर्त इंसान फिर भी बार-बार आकर धमकाता है”।

तृष्णा जैसे-तैसे उस रोज़ भी काम पर गई। पूरे दिन उसके मन में यही सब चलता रहा। वह धूर्त इंसान प्रतिदिन दरवाज़े पर आता और धमकाता। एक दिन तृष्णा को काम पर जल्दी जाना पड़ा और वह अपने भाई को नहीं ले जा पाई। उसकी माँ अंदर लेटी माला जप रही थी। उसी क्षण वहाँ वह धूर्त इंसान आ टपका। उसने इधर-उधर नज़रें घुमाई और जब कोई न दिखा तो छोटे बच्चे को गोद में उठाया, उसका मुँह रुमाल से बंद कर चलता बना। वह जंगल के रास्ते की तरफ बढ़ा। थोड़ा आगे बढ़ने पर दो रास्ते दिखे, वह दायीं ओर मुड़ गया। शाम ढल गई माँ ने बच्चे को बहुत आस-पास खोजा। अंत में थककर दरवाज़े पर बैठकर रोने लगी। तभी तृष्णा काम से लौटकर वापस आई। उसने माँ से रोने का कारण पूछा। उसकी माँ ने उसको पूरी व्यथा सुनाई। तृष्णा ने भी ढूंढने का भरसक प्रयास किया । किन्तु वो असफल रही। अतः वह अकेले जंगल की तरफ निकल पड़ी।

पसीने से भीगी वो भी उसी दो रास्ते पर पहुंची। अब वह बुरी तरह फंस गई कि वह कौन-सा रास्ता चुने। हैरान-परेशान वह ईश्वर को याद करती रही। तभी उसे चाँद कि रोशनी में चमकती हुई मोती दिखाई दी जो कि दायें रास्ते पर लगातार बिखरी हुई थी। वे मोतियाँ उस माला की थी जो उसके पिता ने अपने पुत्र को आखिरी निशानी के तर्ज पर दिया था। वह तुरंत पहचान गई और दायें रास्ते की तरफ बढ़ चली। कई मील चलने पर उसको एक घना जंगल और बस्ती दिखाई दिया। वहाँ उसने देखा कि कोई मुखिया सा एक पत्थर पर बैठा है। वहाँ आस-पास काफी बच्चे थे जिसमें उसका भाई भी शामिल था। धूर्त व्यक्ति भी दिखा। तृष्णा ने तुरंत उसे पहचान लिया। तभी मुखिया ने बोला जल्द से जल्द इन सबकी किडनी आदि निकाल के विदेश में तस्करी कर भेज दो "।

यह सब देख तृष्णा स्तब्ध रह गई। उसने यह सब एक ओट में छिपकर रिकर्ड किया और पुलिस को भी फोन कर दिया। सारे बस्ती के लोग बच्चों को गाड़ी में भरकर कहीं ले जाने की फिराक में थे। तब तक वहाँ पुलिस आ गई। तृष्णा ने पुलिस को सारी सच्चाई बतायी। सारे बच्चों को रिहा कराया गया और पता चला वह बस्ती एक किडनी रैकेट चलाता था जो बच्चों को पकड़कर उनके पुर्जे निकालकर व्यापार करता था। वह ग्रुप पकड़ा गया और उनको जेल हो गई। पुलिस ने तृष्णा को उसकी सूझ-बुझ के लिए शाबाशी दी और उसे सम्मानित भी किया। सबके पूछने पर तृष्णा ने बताया कि कैसे वह रास्ता भटक गई थी पर मोतियों की निशानी देखकर उसको समझ आ गया कि उसका भाई उसी रास्ते पर मिलेगा। लोगों ने उसकी सूझ-बूझ और साहस के लिए उसे बहुत शाबाशी दी।

हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मुश्किल पड़ने पर हमें घबराना नहीं चाहिए, बल्कि धैर्य एवं सूझ-बूझ से कार्य करना चाहिए। यदि हम कोई भी काम धैर्य और सूझ-बूझ से करेंगे तो उसका हल निकल ही जाएगा।

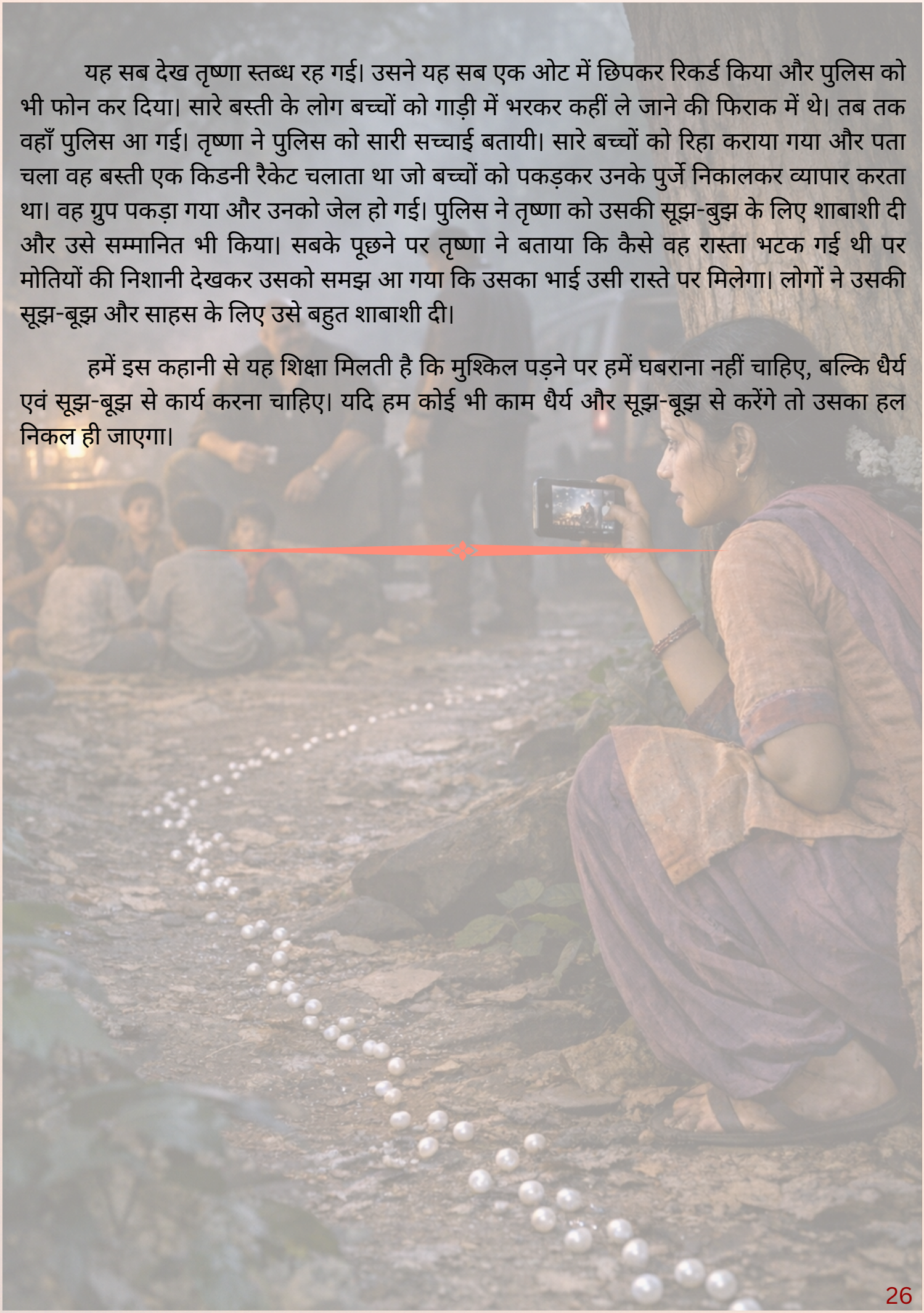

क्योंकि .....

एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

सुश्री तनु शर्मा
लेखाकार

दुनिया का हर नज़ारा रंगीन होता है ....
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो हर मुश्किल में आपके साथ होता है
निराशा में जिसकी मदद का हाथ होता है
जो कभी भाई तो कभी मित्र के समान होता है,
जिनके लिए परिवार ही दुनिया और जहान होता है

दुनिया के लिए आपका प्रत्येक कर्म पावन होता है....
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

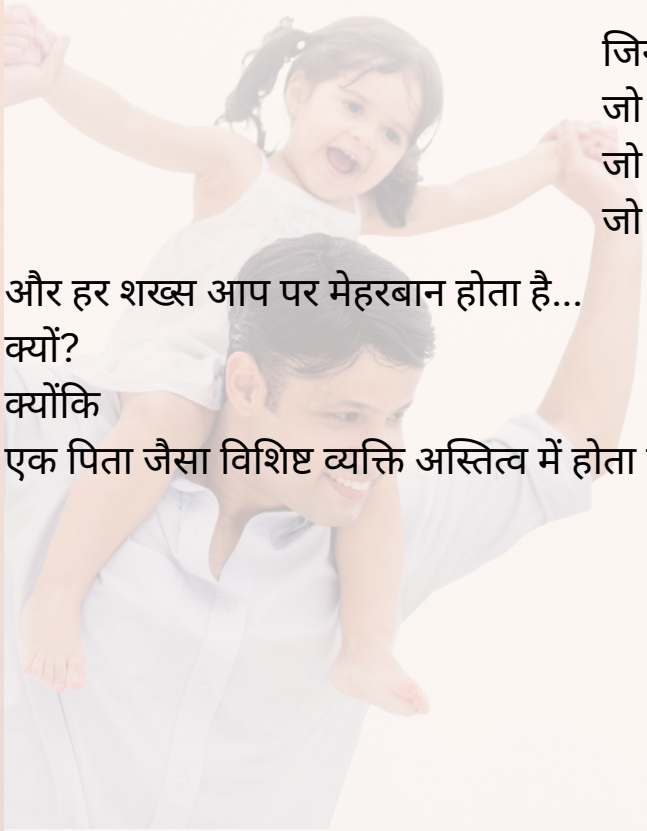

जिनके लिए अपना गम कम और अपनों का ज़्यादा होता है,
जो आपकी याद में हर वक़्त आधा होता है
जो कभी आपकी ज़मीन तो कभी आसमान होता है
जो आपके हर हुनर का कदर दान होता है

और हर शख्स आप पर मेहरबान होता है...
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो आपकी मुसीबत में आपसे आगे होता है,
जीवन की पतंग में धागे सा होता है
जिसके इरादे नेक और मन साफ होता है
जिसके दर पर हर अपराध माफ होता है

आपके पास हर सवाल का जवाब होता है...
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जिनकी वजह से हर खिलौने पर आपका अधिकार होता है
जो आपके जीवन का सबसे खूबसूरत उपहार होता है
जो प्रत्येक विपत्ति पर प्रथम प्रहार होता है
जो आपकी हर सोच का आधार होता है

मलिनता से परे पवित्र आपका किरदार होता है...
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो हर वक़्त नारियल की भूमिका में होता है
बाहर से कठोर तो अंदर से कोमल होता है
जिनकी वजह से आपके पास रोटी कपड़ा और मकान
होता है जो आपके वजूद की पहचान होता है

और आपकी थाली में उपस्थित प्रत्येक पकवान होता है...
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो हर बच्चे का अभिमान होता है
जिनकी वजह से हर श्राप भी वरदान होता है
जो आप पर आई हर आंच के दरमियान होता है
जिनकी वजह से आपका उज्ज्वल भविष्य एवं सुखी वर्तमान होता है

आपका वक़्त सर्वदा ही गतिमान होता है...
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो आपकी ख़्वाहिश की खातिर अपना सब कुछ खोता है
जो आपको दिलासा देकर अकेले में कभी रोता है
जो संघर्ष की बूँद-बूँद से अपने लिबास धोता है
जो हर पुत्र की आस एवं पुत्री का विश्वास होता है

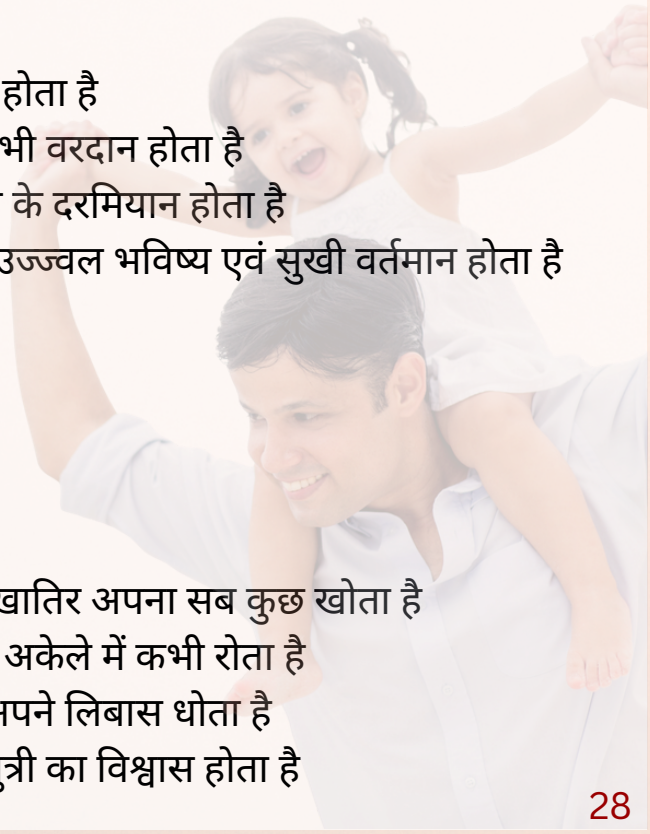

धैर्य एवं संयम सदैव ही आपके पास होता है...
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जिनकी उपस्थिति से घर में प्रतिफल राग होता है
जो आपकी माँ का संपूर्ण सुहाग होता है
जिनके लिए आपका सपना सरताज होता है
जिनके होने मात्र से पूरी दुनिया पर आपका राज होता है

आपका कल बेहतर एवं बेहतरीन आज होता है...
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो निर्भीक होकर भी आपके दूर जाने से डरता है
जो नास्तिक होकर भी आपकी खैरियत की कामना करता है
जो स्वाभिमानी होकर भी आपकी खातिर झुकता है
जिनका संसार आपसे चलकर आप पर ही रुकता है

निराशा की शाम के बाद उम्मीद का प्रकाश मिलता है....
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जिनके लिए पुत्री राजकुमारी एवं पुत्र राजकुमार होता है
जो आपकी रक्षा के लिए ईश्वर को भी ललकार देता है
आपकी एक छींक पर जो बेहद परेशान होता है
आपका सफल होना जिनका दिली अरमान होता है

एक दिन आपका सपना दरवाज़े पर दस्तक ज़रूर देता है
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो आपकी गीता से लेकर कुरान होता है
जो आपका खुदा और भगवान होता है
जिनकी वजह से आपका कोई उपनाम होता है
जिनमें त्याग एवं समर्पण का गुण विद्यमान होता है

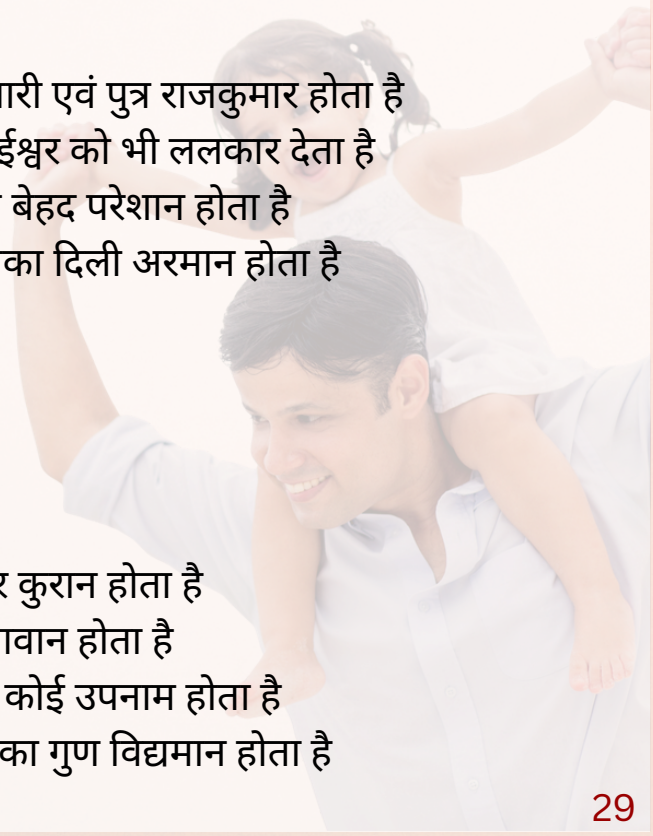

दुनिया का हर गम आपसे अनजान होता है....
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो आपकी कामयाबी पर ही कामयाब होता है
जिनका किया हुआ सब कुछ बेहिसाब होता है
जो अपनी नींद त्यागकर आपका ख्वाब बुनता है
जो आपकी राह के काँटों को अपने हाथ से चुनता है

खुशी का हर एक फल आपके बगीचे में खिलता है...
क्यों?
क्योंकि
एकपिता जैसा विशिष्टव्यक्ति अस्तित्व मेंहोता है .....

जो आपके उच्च से उच्चतम तक का सफर होता है
दवा पर भी जिनकी सच्ची दुआ का असर होता है
जो आपकी पसंद नापसंद का जानकार होता है
जिनका लिया गया निर्णय उचित ही हर बार होता है

आत्मविश्वास आपके साथ हर पहर होता है
क्यों?
क्योंकि
एक पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

जो स्वाभिमान का साक्षात प्रतिमान होता है
जिनके प्राण से भी ज़्यादा कीमती उनका प्रतिज्ञान होता है
जो नदी नहीं तालाब नहीं भावनाओं का गहन समंदर होता है
जिनके लिए भगवान उनकी संतान के अंदर होता है

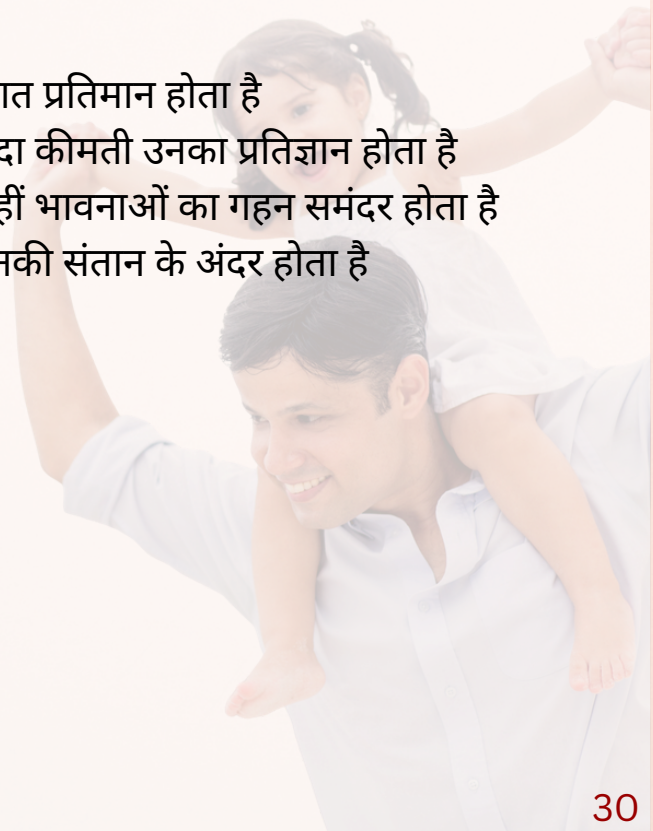

सकारत्मकता का प्रवाह आपकी तरफ निरंतर होता है
क्यों?
क्योंकि
पिता जैसा विशिष्ट व्यक्ति अस्तित्व में होता है .....

घर का आँगन

श्री शाह सावन जयेश कुमार
लेखाकार

सुबह के 9 बजे का समय था। एक घर के आंगन में पड़ती हुई खिल-खिलाती धूप। आंगन में बड़ा सा नीम का पेड़। उस पेड़ की छांव में पड़ी एक मोटरकार। यह पीली मोटरकार इस घर के मुखिया सुनील के दिल को बहुत प्रिय है। क्योंकि यह वही कार है जिसको सुनील और उसकी पत्नी माला ने उनकी गुड़िया की पहली वर्षगांठ पर खरीदा था। इसी मोटरकार ने ही उनके बेटे मुन्ना की किलकारियां भी देखीं थी।

सुबह के 9.30 बजे है, सुनील अपने कार्यालय के लिए वही अपनी पीले रंग की मोटरकार को लेकर निकल रहा है। भारतवर्ष के हर उस मध्यमवर्गीय परिवार की तरह सुनील के जीवन के भी वही रंगरुप है। वही एक नौकरी, वही घर-परिवार और वही सर्दी-गर्मी वाला जीवन। सुनील हर-रोज सुबह 6 बजे उठता है। दातुन करने के बाद आंगन के पेड़ के नीचे थोड़ा व्यायाम एवं सूर्य नमस्कार करता है। फिर नित्यक्रियाएं खत्म करकें सुबह का नाश्ता करता है। नाश्ता करने के बाद, कार्यालय जाने के लिए तैयार होता है। और हर रोज 9.30 बजे सुबह को पीली कार में निकलता है।

माला की सुबह 5 बजे ही, हो जाती है। सुबह की नित्यक्रियाएं करने के बाद, वह इसी आंगन में यही पेड़ के नीचे, योगासन करती है। फिर वह सुनील को 6 बजे नींद से जगाकर नाश्ता तैयार करती है। उसकी गुड़िया रानी 7.30 के आस-पास नींद से जाग जाती है। और मुन्ना की सुबह, 8 बजे के बाद होती है। दोनों भाई-बहन की सुबह एक ही काम करके शुरु होती है- वह है आंगन में रखी हुई गेंद के साथ खेलकर।

नाश्ता करते समय पूरे परिवार का पहला मिलन होता है। गुड़िया को पापा के बिना और मुन्ना को मम्मी के बिना, मानो दोनों को नाश्ता करते समय मम्मी-पापा चाहिए।

आप सोच रहे हो कि मैं कौन हूँ? मुझे कैसे इस पूरे परिवार की सुबह का पूरा पता है। मैं हूँ “आँगन”। मेरी ही गोद में तो परिवार की सुबह की शुरुआत होती है। एक खिड़की से मैं पूरे परिवार को देखता भी रहता हूँ। इसलिए मुझे तो सब पता होगा ही। अभी सुबह के 9.30 बजे हैं। सुनील को “टाटा” बोलने के लिए पूरा परिवार आया है। सुनील के मन में यही मंथन है कि कब शाम होगी और मैं इसी आंगन में अपने परिवार से मिल पाऊंगा। माला की आंखें भी यही सोच में डुबी है कि कब मैं अपने पूरे दिन का हाल मेरे पति को बता पाऊँगी। गुड़िया और मुन्ना के हाथ-पांव भी अभी से उतावले है कि कब पापा वापस आकर हमें अपनी गोदी में उठाएंगे।

मैं एक आंगन हूं तो मूक दर्शक बनकर हर रोज ये जुदाई देखता हूँ। मैंने काफी बार ये विचार भी किया है कि यह जुदाई जरुरी भी है लेकिन फिर ये भी देखा है कि मिलन का आनंद उतना ही ज्यादा है, जितनी लंबी जुदाई है। रविवार की खुशी सबसे ज्यादा इसीलिए है, क्योंकि सबको पता है कि सोमवार को एक बार फिर सबको बिछड़ना है।

लेकिन हर शाम को इस आंगन में फिर बहार आती है। सुबह को "टाटा" बोलने वाले हर मुँह पर मुस्कान खिलती है, जब वही पीली मोटरकार इस आंगन में आती है, परिवार की खुशियों को देखकर, आँगन में पड़ी हुई अन्य निजी वस्तुएँ व गेंद में भी जीवंत हो उठता है। दुनिया के हर परिवार के हर एक सदस्य का दिल यही बोलता है की "मेरी दुनिया की शुरुआत और अंत यही आंगन ही है।"

भूख और स्वाभिमान

श्री आयुष कुमार
लेखाकार

सड़क किनारे एक बच्चा खड़ा था,
चंद जूठी थालियों को निहारता।
अनजान था वह बेशक, पर उसकी भूख जानी-पहचानी थी।
एकटक निहारती उन थालियों को उसकी आँखे,
मानो दौड़कर वह जाए और सारे जूठन को समेट ले अपने उदर में।
पर शायद उसके अंदर के इंसान का स्वाभिमान
इसकी इजाज़त नहीं दे रहा था।
पर उसकी आँखे साफ़ बता रही थीं
कि कहीं-न-कहीं मारना चाह रहा है वह अपने भीतर के इंसान को
और बन जाना चाहता था कुछ भी...
चूहे, बिल्ली, सुअर, कुत्ता, गाय, भैंस...
ताकि खा सके वह भी आज पेट भर।
पर ये क्या, संघर्ष तो उन जानवरों में भी था—
जो जितना ताक़तवर, उसके मुँह में उतना बड़ा निवाला।
चुहे बिल में जा चुके थे,
क्योंकि बिल्ली थाली में मुँह डाल उलट-फेर करने आ गई थी।
पर अब क्या, बिल्ली भी खामोश हो गई थी,
क्योंकि सुअरों की टोली उन थालियों के ढेर पर धावा बोल चुकी थी।

कुछ वक़्त बीता ही था
कि कुत्तों का झुंड आ गया था,
और ये कुत्ते तो मानो सुअरों से लड़ पड़े हों।
पर अब नज़ारा कुछ और था—
गायों-भैसों की टोली अपनी ही धुन में झूमती आ चुकी थी,
और उनके आते ही सारे छोटे जानवर पीछे हट गए थे।
अब बस वे ही खा रहे थे,
आराम से जुगाली कर रहे थे,
और ये छोटे जानवर—
चूहा, बिल्ली, सुअर, कुत्ता—
इधर-उधर बिखरी पड़ी थालियों से,

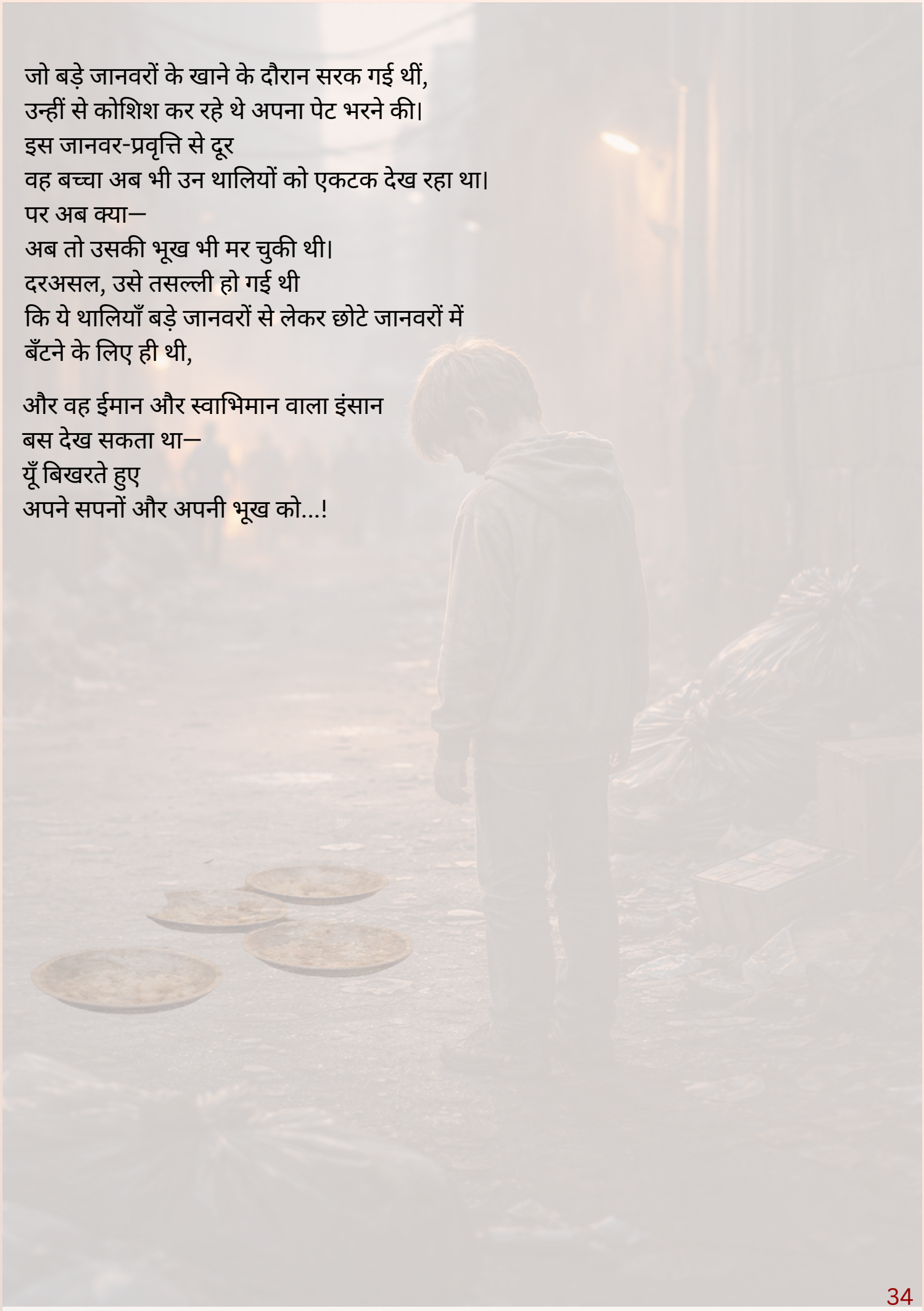

जो बड़े जानवरों के खाने के दौरान सरक गई थीं,
उन्हीं से कोशिश कर रहे थे अपना पेट भरने की।
इस जानवर-प्रवृत्ति से दूर
वह बच्चा अब भी उन थालियों को एकटक देख रहा था।
पर अब क्या—
अब तो उसकी भूख भी मर चुकी थी।
दरअसल, उसे तसल्ली हो गई थी
कि ये थालियाँ बड़े जानवरों से लेकर छोटे जानवरों में
बँटने के लिए ही थी,

और वह ईमान और स्वाभिमान वाला इंसान
बस देख सकता था—
यूँ बिखरते हुए
अपने सपनों और अपनी भूख को...!

स्वाद बनाम स्टाइल

श्री शिवजी पांडे
वरिष्ठ लेखाकार

यह एक संयुक्त परिवार की कहानी है, जिसमें माँ-पिताजी, 2 बेटे व 2 बहुएँ साथ रहते थे। दीपावली वाले दिन सुबह की बात है। दोनों बहुएँ आशा और रेखा दोनों रसोईघर में अपने-अपने काम का मोर्चा संभाल रहीं थीं। दोनों में ही अच्छा खाना बनाने की होड़ लगी थी और परिवार में अपने-अपने नाम की जड़ जमाना चाह रहीं थीं। एक ओर आशा ने कहा कि वह खीर बनाने का काम संभालेगी, दूसरी ओर रेखा ने भी मलाई खीर बनाने का जिम्मा लिया। दोनों खाना बनाने के जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए, अपने-अपने मोर्चे को संभालते हुए खड़ी हुई। आशा ने अपने खीर में मेवा, मिश्री, केसर डाली, जबकि रेखा ने युट्यूब पर देखकर खीर बनानी शुरु की। जिसमें उसने चॉकलेट स्ट्राबेरी फ्लेवर डाल दिया। आशा ने रेखा को कहा- "रेखा खीर में क्या डाल रही हो। ये तो पूजा का खीर है। ये होटल का खीर नहीं है"। रेखा ने मुस्कुराते हुए कहा "बहन दुनिया बदल रही है। भगवान भी कुछ नया टेस्ट करना चाहेंगे"। इसपर दोनों के बीच बहस बढ़ती गयी। आशा ने कहा- "पूजा का खाना शुद्ध और पारंपरिक होना चाहिए"। रेखा कहती है – "नई पीढ़ी को कुछ हटकर सोचना चाहिए। तुम तो पुराने जमाने की बात सोचती रहती हो"।

उसी बीच में सासु माँ ने आवाज लगाई- "बहुओं... खाना कब तक बनेगा?"। दोनों ने एक दूसरे को देखकर कहा "बस अम्मा जी कुछ ही देर में"।

जब प्रसाद (खीर) परोसा गया तो दोनों खीर स्वाद में लाजवाब थी। पर रेखा की खीर ने सबको अचरज में डाल दिया। बच्चों को चॉकलेट खीर इतनी पसंद आयी की सब ने दुबारा मांग कर खाया।

सासु माँ ने दोनों को गले लगाते हुए कहा “तुम दोनों ने मिलकर तो भगवान को भी खुश कर दिया और हमें भी”। लेकिन रेखा मन ही मन सोच रही थी कि आशा का खाना बनाने का ढंग मुझे हरा नहीं सकता। आशा दीदी की परंपरा अच्छी तो है। पर मेरा तरीका भी कम नहीं।

शाम तक दीपावली के दीपक सज चुके थे। रेखा ने अपनी पसंदीदा फूलों की माला और आशा ने चमकीले लाईट से, लक्ष्मी जी और गणेश जी की मूर्ति सजाई। और घर के सब मेहमान आने लगे। तो घर की रोशनी देखकर हर कोई तारीफ करने लगे।

कोई रेखा की दीपों की सुंदरता देखकर कह रहा था- ‘कितनी प्यारी सजावट हुई है यार!’
कोई आशा की रंगीन लाईट पर फिदा होने लगता है। चारों ओर मेले का माहौल सा बन गया है। और सभी लोगो में देखा जाए तो सासु माँ बहुत खुश थी। बहुओं का उनका यह अनोखा संगम बहुत अच्छा लगा।

पर्व के बीच में पहली बार रेखा और आशा ने एक दूसरे के तारीफ की। रेखा बोली आशा तुम्हारे गुब्बारे और लाईट ने तो माहौल बना दिया। आशा खुशी से झूम उठी। दीदी आपके फूलों के बिना ये सब अधूरा लगता। ये पहला मौका था जब दोनों ने एक दुसरे की बढ़ाई की। लेकिन जैसे ही मेहमान चले गए, घर में फिर से सन्नाटा हो गया। रेखा और आशा में फिर वही पुराना झगड़ा शुरु हो गया। फिर वही बर्तन धोने का मुद्दा उठाकर रेखा ने कहा “आशा पूजा की बर्तन मुझे दे दो, मैं अच्छे तरीके से धोऊंगी”। आशा ने मुंह फुलाकर कहा “रेखा इतना भी साफ क्या करना है। बर्तन तो बर्तन होता है”। फिर सफाई को लेकर बहस शुरु हुई। रेखा ने झाड़ू लगाते हुए कहा- “तुम्हें झाड़ू लगाने आता भी है क्या?” आशा ने कहा “रेखा दीदी आप झाड़ू कम और टेंशन ज्यादा लेती है।

सासु माँ अपनी चरपाई पर बैठी इन दोनों की लड़ाई सुनकर परेशान हो जाती थी। पर अब सब कुछ समझ चुकी थी। यही तो इस घर का रंग था।

एक रात रेखा को तेज़ बुखार आ गया। सासु माँ और आशा दोनों परेशान हो गए। आशा पूरी रात रेखा के सर पर पानी की पट्टी देती रही। रेखा की आँखो से आँसू आ गए । उसने धीमे से कहा “आपने मेरी इतनी सेवा की, मुझे लग रहा था सिर्फ आप नियम और कायदों से प्यार करती हैं।

आशा ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया “रेखा तुम मेरी बहन जैसी हो, तुम्हारे बिना यह घर सुना लगता है, जब तुम एक दिन के लिए भी अपने मायके चली जाती हो”। आशा के दिल में रेखा के लिए इज्जत और प्यार एक साथ जग गया।

इस प्रकार दोनों का प्यार देखकर सासु माँ हैरान हो गई। कहने लगी “अब मैं तुम दोनों बहुओं के बीच में नहीं बोलूंगी, क्योंकि तुम दोनों का प्यार ही एक दूसरे के प्रति आत्म-रक्षक के समान है।
इससे एक घर के रहस्य का पता चल जाता है कि दो औरतों के बीच प्यार भी उतना ही होता है,जितना कि झगड़ा।

फिल्म और समाज पर उनका प्रभाव

श्री आशीष रंजन
लेखाकार

फिल्म जिसे हम सिनेमा, चलचित्र आदि के नामों से भी जानते हैं, यह हमारे समाज में मनोरंजन का एक मुख्य और सस्ता साधन है। कहा जाता है कि फिल्म हमारे समाज का आईना होता है अर्थात यह अपने समकालीन समाज का परिदृश्य, विशेषता, रीतियाँ-कुरीतियाँ सामाजिक बुराईयाँ, जन-जीवन का एक चलंत स्वरूप होता है। फिल्म हमारे जन-मानस के विभिन्न मुद्दों एवं उसके समाधान को भी परिदृश्यत करता है।

- फिल्म का समाज पर प्रभाव

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक । फिल्म भी उसी तरह से समाज पर दोनों तरह का प्रभाव छोड़ता है।

- सकारात्मक प्रभाव

→ यह एक मनोरंजन का मुख्य साधन है, जो मनुष्यों की चिंता, तनाव एवं अवसाद को दूर भगाने में मदद करता है।

→ फिल्म के सकारात्मक किरदार लोगों के दिलों एवं मनोभूमि पर अमिट छाप छोड़ते हैं, जो उन्हें सकारात्मकता की ओर प्रेरित करते हैं।

→ फिल्में समाज में व्याप्त अंधविश्वासों के भी खंडन करता /नकारता है, एवं लोगों के दिलों में व्याप्त डर को दूर भगाने में भी एक अहम किरदार के रूप में सामने आता है।

→ फिल्में समाज में व्याप्त बुराइयों, कुरीतियों आदि के मुद्दों को भी उछालता है और उन्हें समाज से दूर भगाने में योगदान देता है। बहुत से सामाजिक मुद्दे जैसे कि बाल-विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा, यौन शोषण, महिलाओं के खिलाफ अपराध, भ्रष्टाचार इत्यादि जैसे मुद्दों पर जनमानस को जागरूक करने का श्रेय भी फिल्मों को दिया जाता है।

→ फिल्में समाज में प्रेम-भाईचारा सामाजिक समरसता, एकता व अखंडता, सामाजिक योगदान को बढ़ाने का भी काम करता है।

- नकारात्मक प्रभाव

फिल्मों को उसके निर्माता निर्देशक, अभिनेता एवं अभिनेत्री एक व्यापार के रूप में देखते हैं और अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए अपनी फिल्म में कई तरह की नकारात्मकता भी परोसते हैं। आज के अधिकतर फिल्मों में क्रूरतम हिंसा, यौन सामग्री, नशाखोरी, अपराध, आतंकवाद का महिमामंडन कर के परोसा जाता है। इसका सबसे बुरा प्रभाव किशोरों पर पड़ता है, क्योंकि वह वास्तविक दुनिया और फिल्म के रील वाली दुनिया में फर्क नहीं कर पाते हैं। फिल्मों में अभिनेताओं को नशा करते देख उनका बाल मन शराब, सिगरेट जैसी नशाओं की ओर बचपन से ही अग्रसर हो जाते हैं, जो कि उनकी शिक्षा को भी प्रभावित करता है, और कहीं न कहीं वो अपने करियर में असफल हो जाते हैं।

→ फिल्मों को देखकर समाज में कई अपराध भी बढ़े हैं, जैसे हत्या, अपहरण, बलात्कार, लूट-पाट, रंगदारी जो कि कहीं न कहीं फिल्मों से प्रेरित होती हैं।
→ फिल्में युवाओं के मन में महिलाओं के प्रति विकार भरने का भी काम करती है। युवा उन्हें बस अपने मनोरंजन का साधन समझते हैं, जिससे की महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, यौन शोषण, बलात्कार, दहेज-यातना जैसे गंभीर अपराध देखने को मिलते हैं।
→ फिल्में किशोरों एवं युवाओं के मन में पैसे, शक्ति, सत्ता इत्यादि का महिमामंडन कर के उन्हें उसे हासिल करने को गलत रास्ते पर भी जाने पर मजबूर कर देते हैं, क्योंकि उनके दिमाग में यह बैठ जाता है कि उसके बिना समाज उन्हें कमतर समझेगा, उनकी समाज में इज्जत, रुतबा कम होगा।

उपसंहार : तमाम बुराइयों के बाद भी फिल्म के माध्यम से समाज में अच्छे बदलाव लाए जा सकते है बशर्ते निर्माता - निर्देशक अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को भी समझे एवं उसे व्यापार से परे रखें।

अर्थव्यवस्था "एक अधूरा विषय"

सुश्री माधवी तोमर
लेखाकार

आज का युग आर्थिक प्रगति और औद्योगिकीकरण का युग है। हर देश आर्थिक रूप से सशक्त बनने की दौड़ में लगा हुआ है। किंतु इस आर्थिक विकास की दौड़ में पर्यावरण को जिस प्रकार से नजर अंदाज किया जा रहा है, वह एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। कोई भी अर्थव्यवस्था तभी टिकाऊ, स्थायी और समृद्ध हो सकती है जब वह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन को केंद्र में रखकर संचालित की जाए। यदि पर्यावरणीय कारकों की अनदेखी कर केवल आर्थिक लाभ की ओर देखा जाए, तो वह विकास अधूरा, असंतुलित और अंततः विनाशकारी सिद्ध होगा।

आर्थिक गतिविधियों में पर्यावरण की भूमिका:

प्रकृति और पर्यावरण ही किसी भी देश की आर्थिक संरचना की नींव होते हैं। जल, जंगल, ज़मीन, खनिज, वायु, जीव-जंतु और पारिस्थितिकी तंत्र – ये सभी प्राकृतिक संसाधन हैं जिन पर कृषि, उद्योग, ऊर्जा, निर्माण, पर्यटन और अन्य सभी आर्थिक गतिविधियाँ निर्भर करती हैं। उदाहरण के तौर पर भारत की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा कृषि पर आधारित है, और कृषि पूर्णतः वर्षा, मिट्टी की उर्वरता और जलवायु पर निर्भर करती है। यदि पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ता है तो फसलें प्रभावित होती हैं, जिससे खाद्य संकट, महंगाई और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

पर्यावरणीय क्षरण से होने वाला आर्थिक नुकसान:

पर्यावरणीय क्षरण से न केवल जैविक विविधता को खतरा होता है, बल्कि यह सीधे आर्थिक क्षति का कारण बनता है। वायुप्रदूषण, जलप्रदूषण, वन-विनाश, भूमि अपरदन, जलवायु परिवर्तन आदि के कारण प्रतिवर्ष लाखों करोड़ों रुपये की आर्थिक हानि होती है।विश्व बैंक की 2021 की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की GDP का लगभग 8% हिस्सा केवल वायु प्रदूषण के कारण होने वाले स्वास्थ्य और श्रम हानि के कारण नष्ट होता है। जलवायु परिवर्तन के चलते प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो रही है— जैसे बाढ़, सूखा, चक्रवात, लू और जंगल की आग— जो देश की अर्थव्यवस्था को गहरा आघात पहुँचा रही हैं।

सतत विकास की आवश्यकता:

सतत विकास का अर्थ है ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करे, बिना आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए। यह केवल तभी संभव है जब आर्थिक योजनाएं पर्यावरणीय संरक्षण को साथ लेकर चलें। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा, जैविक खेती और हरित प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देकर हम पर्यावरण को हानि पहुँचाए बिना विकास प्राप्त कर सकते है। उदाहरण के लिए, यदि एक राज्य कोयले से चलने वाले बिजली संयंत्रों को बंद करके सौर ऊर्जा पर आधारित संयंत्र स्थापित करता है, तो इससे न केवल प्रदूषण कम होता है, बल्कि दीर्घकालिक रूप से ऊर्जा पर होने वाला व्यय भी घटता है और रोजगार के नए अवसर भी पैदा होते हैं।

वैज्ञानिक और वैश्विक चेतावनियाँ:

संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (IPCC) ने अपनी रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि यदि वैश्विक तापमान को 1.5°C से अधिक बढ़ने दिया गया, तो समुद्र स्तर में वृद्धि, कृषि संकट, पानी की कमी और जनस्वास्थ्य संबंधी आपातकाल जैसी समस्याएँ तीव्र हो जाएंगी। ये समस्याएँ सीधे अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेंगी – खाद्यान्न की कमी, व्यापार बाधा, आपदा प्रबंधन पर बढ़ता व्यय और जनसांख्यिकीय विस्थापन। इससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय संकट अब केवल पारिस्थितिक संकट नहीं, बल्कि आर्थिक संकट भी बन गया है।

भारत सरकार की नीतियाँ और प्रयास:

भारत ने भी इस दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय हरित योजना, स्वच्छ भारत अभियान, जल जीवन मिशन, नेशनल इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन, राष्ट्रीय जैविक खेती योजना, वन संरक्षण अधिनियम, ईको सेंसिटिव जोन की घोषणा जैसे प्रयास पर्यावरण और अर्थव्यवस्था को एक साथ लेकर चलने के उद्देश्य से शुरू किए गए हैं। इन योजनाओं का मकसद यह है कि विकास की गति को कायम रखते हुए पर्यावरणीय संतुलन भी बनाए रखा जाए, ताकि दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित हो सके।

जन-जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी:

केवल सरकार के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं, आम जनता की भागीदारी भी उतनी ही आवश्यक है। हर व्यक्ति यदि अपने दैनिक जीवन में जल बचत, बिजली की बचत, प्लास्टिक का प्रयोग कम करना, पुनःउपयोग करना, वृक्षारोपण करना, कार पूलिंग, साइकलिंग, जैविक खाद्य का उपयोग आदि जैसे छोटे-छोटे उपाय अपनाए, तो सामूहिक रूप से बड़ा प्रभाव उत्पन्न हो सकता है। इसके अलावा स्कूली शिक्षा से ही पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के संबंधों की जानकारी दी जानी चाहिए ताकि भावी नागरिक अधिक जिम्मेदार बन सकें।

1. टीईईबी अध्ययन (TEEB) (The Economics of Ecosystems and Biodiversity)
वर्ष: 2008, संयुक्त राष्ट्र समर्थित अध्ययन

- पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystems) जैसे जंगल, नदियाँ, आर्द्र भूमियाँ अगर नष्ट होते हैं, तो अरबों डॉलर मूल्य की सेवाएं जैसे पीने का पानी, परागण, जलवायु संतुलन, मिट्टी की उर्वरता आदि समाप्त हो जाती हैं। 2008 की रिपोर्ट के अनुसार, अकेले जैव विविधता के नुकसान से प्रत्येक वर्ष दुनिया को $2 से $4 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान हो सकता है। प्रकृति की सेवाओं का मूल्यांकन करने पर पता चलता है कि पर्यावरणीय हानि सीधे आर्थिक हानि में बदलती है।

2. IPCC रिपोर्ट (Intergovernmental Panel on Climate Change)
अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन रिपोर्ट वर्ष: 2023 (छठवीं आकलन रिपोर्ट)

- जलवायु परिवर्तन के कारण खेती में उत्पादकता घट रही है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर खतरा है। इससे कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था, विशेषकर भारत, अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्रों में GDP का बड़ा हिस्सा प्रभावित हो सकता है। जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि आर्थिक संकट भी है।

3. WHO और World Bank रिपोर्ट (2016) विषय: स्वास्थ्य, प्रदूषण और आर्थिक बोझ

- वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों के कारण 2016 में वैश्विक GDP का लगभग 5% तक खर्च केवल स्वास्थ्य देखभाल में हुआ। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में यह अभी भी भारी आर्थिक बोझ है। पर्यावरणीय प्रदूषण का सीधा प्रभाव सरकारों की आर्थिक क्षमता पर पड़ता है।

4. Natural Capital Accounting (World Bank, 2021) विषय:
प्राकृतिक संसाधनों की कीमत और राष्ट्रीय संपत्ति

- विश्व बैंक ने दिखाया कि कई विकासशील देशों की 30% से अधिक संपत्ति प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होती है। अगर प्राकृतिक पूंजी (जैसे जंगल, जल, मिट्टी) में गिरावट आती है, तो उस देश की कुल राष्ट्रीय संपत्ति भी घट जाती है। पर्यावरणीय पूंजी, आर्थिक पूंजी की नींव है।

निष्कर्ष:

अर्थव्यवस्था और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं। एक संतुलित और समृद्ध समाज का निर्माण केवल तभी संभव है जब आर्थिक नीतियों में पर्यावरण को केंद्रीय स्थान दिया जाए। केवल GDP की वृद्धि, औद्योगिक उत्पादन या निर्यात बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, जब तक कि वह प्रकृति के साथ सामंजस्य में न हो।

इसलिए यह कहना पूर्णतः तर्क संगत है कि — "पर्यावरण को नज़रअंदाज़ कर अर्थव्यवस्था अधूरी है"। हमें एक ऐसी विकास नीति की आवश्यकता है जिसमें मानव, प्रकृति और बाजार सभी के बीच संतुलन बना रहे। तभी हम एक सुरक्षित, स्वच्छ, समृद्ध और टिकाऊ भविष्य की ओर बढ़ सकेंगे।

आपके पत्र

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हि.क./2025-26/361 दिनांक:26.12.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
तमिलनाडु, चेन्नई

विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"अमृत"** के **34वें अंक** की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"अमृत"** के **34वें अंक** की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री अजयनाथ त्रिपाठी का लेख **'तनाव एवं मानसिक बीमारियाँ'**, श्री शिव जी पांडे का लेख **'देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी'** सुश्री तनु शर्मा की कविता **'खुशी है.....'**, सुश्री स्वाति कुमार की कविता **'हिंदी कार्मिक की सेवानिवृत्ति'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signe
Uday Pratap S
Date: 02-01-2

(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

समता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2025-26/ ५५० दिनांक : 24.12.2025

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
तमिलनाडु, चेन्नई

विषय:- हिंदी पत्रिका 'अमृत' के 34वें अंक की पावती।

सदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 16.12.2025

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृत' के 34वें अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु सादर धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं विषय वस्तु बेहतरीन है। इस अंक में प्रस्तुत लेख ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। विशेषत: **'हिंदी कार्मिक की सेवानिवृत्ति'**, **'ए जिंदगी'**, **'खुशी है'**, **'भावनाओं की परिधि.....'**, **'काबिलियत'** एवं **'मैं बढ़ा ही जा रहा हूँ'** सराहनीय हैं। पत्रिका में प्रस्तुत कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र बेहतरीन हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या- रा.भा.अनु./ले.प./90/पत्रिका पावती/2025-26/246 दिनांक:09-01-2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
तेनामपेट, चेन्नई- 600 018.

विषय: हिंदी पत्रिका "अमृत" के 34वें अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "अमृत" के 34वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ जैसे- श्री आयुष कुमार द्वारा लिखित "घर से दूर नौकरी- एक संघर्ष" सुश्री स्वाति कुमार की रचना "हिंदी कार्मिक की सेवानिवृत्ति", सुश्री माधवी तोमर की रचना "ए जिंदगी", श्री मुकेश कुमार द्वारा रचित "काबिलियत", श्री शशिकान्त कुमार की रचना "रामेश्वरम् की यात्रा" एवं सुश्री अंजिता अमल द्वारा लिखित "प्राकृतिक सौंदर्य और उसका संरक्षण" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 09-01-2026
11:21:47

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-हि.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1243029/2025 दिनांक:22-12-2025

सेवा में

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तमिलनाडु
चेन्नई-600018

विषय:- हिंदी पत्रिका 'अमृत' के 34वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "अमृत" पत्रिका के 34वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु धन्यवाद। इस पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर श्री आयुष कुमार की "घर से दूर नौकरी- एक संघर्ष", सुश्री स्वाति कुमार की "हिंदी कार्मिक की सेवानिवृत्ति", सुश्री तनु शर्मा की "खुशी है" एवं सुश्री अंजिता अमल की "प्राकृतिक सौंदर्य और संरक्षण: हमारी जिम्मेदारी" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक(राजभाषा)

ऑडिट दिवस के दौरान आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में हमारे कार्यालय को प्रथम पुरस्कार

हिन्दी कार्यशाला

designed by Sanjeev